कवि आलोचक मुक्तिबोध

सम्पादक

भूपेन्द्र सिंह

प्रकाशक
वीर बहादुर पब्लिकेशन
साउथ सीटी, राय बरेली रोड,
लखनऊ - 226025

ISBN : 978-93-84817-45-9

©लेखक

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : ₹ 225/-

भारत में प्रकाशित

मुद्रक : दादा प्रेस, लखनऊ

अनुक्रमणिका

- भूमिका

भाग - 1 युगबोध और काव्य प्रकृति

- अन्दाज़े–बयाँ 1-17

  प्रो0 कृष्ण मोहन

- हमारा समय और 'अंधेरे में' 18-56

  प्रो0 आशीष त्रिपाठी

- मुक्तिबोध की काव्य चेतना 57-68

  प्रो0 एम0 वेंकटेश्वर

- मुक्तिबोध : युग सत्य के अन्वेषक कवि 69-76

  डॉ0 नीरज खरे

- अभिव्यक्ति के खतरों से जूझता कवि : मुक्तिबोध 77-87

  डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय

- मुक्तिबोध के काव्य में शिल्प–विधान 88-96

  डॉ0 सूर्यकान्त त्रिपाठी

- मुक्तिबोध : युग के हस्ताक्षर कवि 97-104

  डॉ0 अमिता दुबे

- मध्यवर्ग का आत्मसंघर्ष और मुक्तिबोध की कविता 105-113

  डॉ0 सत्यपाल शर्मा

- जन संवेदना के कवि : मुक्तिबोध 114-120

  डॉ0 बिपिन कुमार

- मुक्तिबोध के काव्य में नारी 121-126

  कमला चौधरी

मुक्तिबोध के काव्य में शिल्प-विधान

■ सूर्यकांत त्रिपाठी

दिक्काल के कन्धों पर खड़े कवि 'गजानन माधव मुक्तिबोध' का काव्य शिल्प, उनकी अनगढ़ भाषा, उनके प्रस्तर–युगीन हथियारों की तरह खुरदुरे सहस्रशीर्षा–बिम्ब उनके बौद्धिक किन्तु आरण्यक संस्कार, उनका आधुनिकताबोध प्रभृति का समुच्चय है। वास्तविकता तो यह है कि मुक्तिबोध अपने समय से दो दशक बाद के कवि है और आज की अधुनातन कविता उनको समझने की 'निसैनी' मात्र है। उनके काव्य के संदेश अथवा सौष्ठव अथवा स्वरूप अथवा शिल्प पर कुछ लिखने का साहस बड़ा जोखिम भरा काम है। वस्तुतः प्रत्येक युग के साहित्यकार का सामाजिक बोध संवेदना के नये पक्षों को दर्शाता है उसी के अनुरूप काव्य का शिल्प भी परिवर्तित होता है। साहित्यकार का सामाजिक बोध, समय के साथ–साथ विकसित होता है यही वजह है कि एक ही कवि या साहित्यकार की भाषा और शिल्प संबंधी–धारणा सदैव एक जैसी नहीं रहती। वह परिवर्तित होती रहती है। परिस्थितियों के मांग के अनुरूप भाषा और शिल्प में बदलाव ही भाषा और शिल्प को आधुनिकता प्रदान करता है। इसी दृष्टि से किंचित बिंदुओं के आधार पर यहाँ मुक्तिबोध के काव्य–शिल्प के अवलोकन का प्रयास किया गया है–

1. परिस्थिति का दबाव एवं मुक्तिबोध का काव्य–शिल्प :

साहित्य जगत में मुक्तिबोध का आगमन तकरीबन 1936 में हुआ। यह समय छायावादी भाषा तथा शिल्प का यर्थाथ से पार्थक्य का था और इस समय के कवि यर्थाथ से जुड़ने की जुगत में थे। वस्तुतः यह सक्रमण काल था। तत्कालीन साहित्यकारों को दोहरे दबाव की मार झेलनी पड़ रही थी :–

(i) युगीन परिस्थितियों के अनुसार बदलते भावबोध का दबाव।

(ii) साहित्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठित काव्यरूप का दबाव ।

लेकिन मौजूदा भाषा और शिल्प से तत्काल छुटकारा पा लेना संभव नहीं था। मुक्तिबोध की शुरूआती कविताओं की भाषा में छायावादी संस्कारों की झलक का यही कारण है। द्रष्टव्य है मुक्तिबोध की निम्न पंक्तियाँ–